सांस्कृतिक विकास में राष्ट्रकूटों का योगदान

राष्ट्रकूटों ने लगभग दो शताब्दियों तक दक्षिण में एक सुदृढ राज्य पर शासन किया (735-975 ई०)। उनके समय में प्रशासन सुदृढ़ हुआ, अरबों से व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध बढ़े। उनके समय में दक्षिण में इस्लामधर्म का प्रसार हुआ तथा शिक्षा, साहित्य एवं कला की प्रगति हुई।

1. प्रशासन

(अ) राष्ट्रकूटों ने राजतंत्रात्मक प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की। राजा प्रशासन का सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रधान होता था। राजकुल के सदस्य, मंत्री और पदाधिकारी उसके प्रमुख सहायक थे। राष्ट्रकूट राज्य में दो प्रकार की प्रशासनिक इकाइयाँ थीं—(क) राष्ट्रकूटों के प्रत्यक्ष नियंत्रणवाले क्षेत्र जिनपर राजा स्वयं शासन करता था तथा (ख) प्रभाव के अंतर्गत आनेवाले क्षेत्र। इनका शासन अधीनस्थ सामंतों को सौंपा गया था। सामंतों को प्रशासनिक स्वायत्तता दी गई थी, परन्तु केन्द्र का नियंत्रण भी इनपर रहता था। इन क्षेत्रों में राजा का प्रतिनिधि नियुक्त किया जाता था।

(आ) राष्ट्रकूटों के प्रत्यक्ष नियंत्रणवाले क्षेत्र क्रमशः **राष्ट्र, विषय, भुक्ति** और **ग्राम** में विभक्त थे। इनके प्रशासनिक पदाधिकारी क्रमशः **राष्ट्रपति, विषयपति, भोगपति** और **ग्रामपति** थे। इनका मुख्य उत्तरदायित्व शांति-व्यवस्था की स्थापना एवं राजस्व की वसूली करना था। ग्राम प्रशासन स्थानीय **सभा, पटवारी** और अन्य ग्रामीण अधिकारियों की सहायता से होता था। नगर शासन का प्रधान **नगरपति** होता था। गाँवों और नगरों को प्रशासनिक स्वायत्तता प्रदान की गई थी। स्थानीय समितियों का प्रशासन में महत्त्वपूर्ण योगदान था।

(इ) राष्ट्रकूटों द्वारा विशाल और सुसंगठित सेना का गठन किया गया। अरब लेखकों

Scanned with CamScanner

के अनुसार राष्ट्रकूटों के पास विशाल हस्ति सेना थी। पैदल सैनिकों की संख्या भी पर्याप्त थी। राष्ट्रकूटों की सेना में रथों की टुकड़ी नहीं थी। राजा की सेना के अतिरिक्त सामंतों की भी सेना रहती थी जो आवश्यकतानुसार राजा की सहायता करती थी। साम्राज्य की सुरक्षा के लिए राष्ट्रकूटों की एक सेना की टुकड़ी दक्षिण भारत और एक उत्तर भारत में नियुक्त की गई थी।

(ई) भू-राजस्व राज्य की आमदनी का मुख्य स्रोत था। नजराना, वन, खान, चुंगी, युद्ध में लूट की संपत्ति से भी राज्य को आमदनी होती थी। राजस्व का एक बड़ा भाग प्रशासन, सेना और धार्मिक कार्यों तथा शैक्षणिक और कलात्मक विकास पर खर्च होता था।

2. सामाजिक व्यवस्था

राष्ट्रकूट समाज वर्ण और जाति व्यवस्था पर आधारित था। राजवंश के क्षत्रियों की समाज में विशेष प्रतिष्ठा थी। सामान्य क्षत्रियों का दर्जा ब्राह्मणों से नीचा माना जाता था मगर राजवंश ब्राह्मणों से अधिक प्रतिष्ठित माना जाता था। ब्राह्मणों की भी समाज में प्रतिष्ठा थी। उन्हें अनेक सुविधाएँ दी गई थीं। सामान्य लोगों की तुलना में ब्राह्मण आधा कर देते थे। निर्धन और विद्वान ब्राह्मण करमुक्त थे। ब्राह्मणों को सरकारी नौकरी भी दी जाती थी । ब्राह्मणों का मुख्य व्यवसाय शिक्षा देना था। इस समय वैश्यों की स्थिति में गिरावट आई। शूद्रों की स्थति में भी सुधार हुआ। उन्हें धार्मिक अनुष्ठान करने की स्वतंत्रता दी गई। सेना में भी उन्हें स्थान दिया गया। समाज में छुआछूत की भावना प्रचलित थी। बाल-विवाह का प्रचलन था, परन्तु सती प्रथा और विधवा विवाह का प्रचलन नहीं था। विधवाओं को संपत्ति में अधिकार दिया गया था।

3. आर्थिक व्यवस्था

कृषि आर्थिक व्यवस्था का मुख्य आधार था। कपास, ज्वार, चावल, नारियल, सुपारी मुख्य उपज थी। वस्त्र उद्योग उन्नत स्थिति में था। अरबों की सहायता से समुद्री व्यापार होता था। बहुमूल्य लकड़ी, वस्त्र, हीरा-जवाहरात का निर्यात किया जाता था। पश्चिम एशियाई देशों से व्यापारिक संबंध विकसित स्थिति में था। मुद्रा व्यवस्था प्रचलित नहीं थी। शिल्पी और व्यापारिक संघों का आर्थिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान था।

4. शिक्षा और साहित्य का विकास

(क) राष्ट्रकूटों के समय में राज्य द्वारा शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। अग्रहार उच्च संस्कृत शिक्षा के केन्द्र थे। राज्य द्वारा अग्रहारों को आर्थिक सहायता दी जाती थी। शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था थी। मंदिर और जैन तथा बौद्ध विहार भी शिक्षा के केन्द्र थे। सतलोगी का त्रयीपुरुष मंदिर शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।

(ख) राष्ट्रकूटों के समय में संस्कृत, कन्नड़ और मराठी भाषा तथा साहित्य का विकास हुआ। कन्नड़ साहित्य के विकास में जैनों का प्रमुख योगदान था। पम्प, पोन्न और रन्न प्रमुख कन्नड़ लेखक थे। इन तीनों ने क्रमशः **आदिपुराण, शांतिपुराण** और **अजितपुराण** की रचना की। पम्प ने **विक्रमार्जुनविजय** की भी रचना की। जिनसेन ने **हरिवंश** लिखा तथा सोमदेव ने **नीतिवाक्यामृत** तथा **यशस्तिलक चम्पू**। अमोघवर्ष प्रथम ने **कविराजमार्ग**, त्रिविक्रम भट्ट ने **नलचम्पू**, हलायुध ने **कविरहस्य** की रचना की। कुमारिल, वाचस्पति इत्यादि ने अनेक दार्शनिक ग्रंथों की रचना की। कुमारिल ने **श्लोकवार्तिका, तंत्रवार्तिका,**

Scanned with CamScanner

तुप्तिका और वाचस्पति ने **न्याय-कणिका** की रचना की।

5. धार्मिक विकास

राष्ट्रकूटों का समय धार्मिक सहिष्णुता का युग था। इस समय जैन, बौद्ध और ब्राह्मणधर्म प्रचलित थे परन्तु बौद्धधर्म अवनति पर था। बौद्धधर्म की तुलना में जैनधर्म अधिक प्रभावशाली था। अमोघवर्ष द्वारा जैनधर्म को संरक्षण प्रदान किया गया। जैनधर्म ब्राह्मणधर्म का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी था। राष्ट्रकूट राज्य में विष्णु, शिव, लक्ष्मी, आदित्य और पांडुरंग की पूजा मुख्य रूप से प्रचलित थी। धार्मिक अनुष्ठानों में जनता की आसक्ति एवं श्रद्धा थी। राष्ट्रकूटों के समय में दक्कन में इस्लामधर्म का भी व्यापक प्रभाव था। अरब लेखक अल-इस्तखरी के अनुसार राष्ट्रकूटों के साम्राज्य में मुसलमान और जुम्मा मस्जिद थे।

6. कलात्मक विकास

राष्ट्रकूट राजाओं के युद्धों में अधिक व्यस्त रहने से कला की विशेष प्रगति नहीं हो सकी। कुछ मंदिरों एवं गुफाओं का निर्माण राष्ट्रकूटों ने करवाया। कृष्ण प्रथम द्वारा एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया गया। इसकी दीवारों पर गंगावतरण और रावण द्वारा कैलाश पर्वत को उठाने का सुंदर भित्तिचित्र बनवाया गया। मंदिर का निर्माण द्रविड़ शैली में हुआ था। कैलाश मंदिर का निर्माण पट्टदकल के चालुक्यकालीन विरूपाक्ष मंदिर के समान हुआ था मगर आकार में यह दुगुना था। एलिफैंटा की कुछ गुफाओं का भी राष्ट्रकूटों के समय में निर्माण हुआ।

Scanned with CamScanner